जीवन सागर

(September 20, 2003)

इस विशाल सागर के समान अंतहीन यह जीवन प्रतीत होता है।

समय की लहरों पर सवार,
क्षण क्षण की बूँदों से यह हर पल व्यतीत होता है ।
नवजीवन के धुँधले साहिल से प्रारंभ,
इस यात्रा का मार्ग कौन सुनिश्चित करता है ।

इस विशाल सागर के समान अंतहीन यह जीवन प्रतीत होता है।

कभी मिलते हैं दुःखों के तूफ़ान,
कभी शांति की प्रगाढ़ गम्भीरता का परिचय होता है।
समय की लहरों पर सवार यह जीव,
कभी उदासीन तो कभी प्रफुल्लित होता है।

इस विशाल सागर के समान अंतहीन यह जीवन प्रतीत होता है।

दीखता है जैसे सब ओर अनंत समय का बहाव है।
न दिशा, न सहारा, न ही किसी मंज़िल का पड़ाव है।
बिना पथ प्रदर्शक के दिशा का भी पता न होता है।

इस विशाल सागर के समान अंतहीन यह जीवन प्रतीत होता है।

भूल जाता है यात्री,
कि हर सीमित वस्तु का अंत अवश्यंभावी होता है।
सागर की अनंत्ता के भ्रम में,
वह स्वयं को अजर-अमर घोषित कर देता है।

आश्चर्य है कि हर यात्री अंत भूलकर यात्रा करना चाहता है।
सब कुछ जानने के बाद भी अपनी जिजिविषा को और बढ़ाना चाहता है।

पर भूल जाता है मूर्ख कि
हर ज्वार के बाद भाटा अवश्य आता है,
यह विशाल समुद्र भी पृथवी सीमाओं में बँधा होता है।

तथापि,
इस विशाल सागर के समान अंतहीन यह जीवन प्रतीत होता है।

- मोहरहित